(ब) सहभागी प्रेक्षण बनाम असहभागी प्रेक्षण (*Participant observation versus Non-participant observation*)

प्रेक्षक (observer) द्वारा प्रेक्षण (observation) के दौरान अपनाये गये भूमिका (role) के आधार पर प्रेक्षण के दो प्रकार बतलाये गये हैं—सहभागी प्रेक्षण (participant observation) तथा असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation)।

सहभागी प्रेक्षण (participant observation), जैसा कि नाम से ही स्पष्ट है, वैसा प्रेक्षण होता है जिसमें प्रेक्षक (observer) व्यक्तियों के क्रिया-कलापों (activities) में स्वयं हाथ बँटाता है और साथ-ही-साथ उनके व्यवहारों का प्रेक्षण भी करता जाता है। अतः इस ढंग के प्रेक्षण में प्रेक्षक (observer) उस परिस्थिति का एक सक्रिय भाग बन जाता है जिसमें प्रेक्षण किया जा रहा है। सचमुच में इस तरह के प्रेक्षण में प्रेक्षक का उद्देश्य व्यवहारों का ठीक ढंग से वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण करना होता है और इस ख्याल से ही वह समूह की क्रियाओं में हाथ बँटाता है। प्रायः प्रेक्षक व्यक्तियों के व्यवहार के हर पहलू के बारे में अपना विस्तृत रिकार्ड (record) प्रेक्षण-के-जगह पर (on-the-spot) तैयार कर लेता है और बाद में

Scanned with CamScanner

उसका विश्लेषण कर वह एक निश्चित निष्कर्ष पर पहुँचता है। इस विधि में प्रेक्षक व्यक्तियों के समूह का पूर्णकालीन सदस्य (whole-time member) भी बनकर कार्य कर सकता है या अंशकालीन सदस्य (part-time member) बनकर भी कार्य कर सकता है। चाहे उसकी सदस्यता जिस प्रकार की हो, वह सक्रिय रूप से समूह की क्रियाओं में भाग लेता है। सहभागी प्रेक्षण प्रायः असंरचित या असंगठित (unstructured) होता है। दूसरे शब्दों में, इस तरह के प्रेक्षण (observation) में प्रेक्षक को इस बात की छूट होती है कि वह स्वयं ही यह निश्चय करे कि उसे क्या प्रेक्षण करना है, कैसे प्रेक्षण करना है तथा कितना समय तक प्रेक्षण करना है। इस तरह से वह परिस्थिति की आवश्यकतानुसार अपने प्रेक्षण के विषय-वस्तु एवं कार्यक्रम में परिवर्तन भी लाता है। इस तरह के प्रेक्षण में प्रेक्षक (observer) अपना परिचय सदस्यों से प्रायः छिपाकर रखता है या वह कोई ऐसी भूमिका (role) अपनाकर समूह में प्रवेश करता है जिससे प्रेक्षण किये जाने वाले व्यवहार का पैटर्न प्रभावित न हो। लेकिन यह कोई जरूरी नहीं है कि वह अपना परिचय हमेशा छिपाकर ही रखे। हाँ, ऐसा करने से उसे कुछ लाभ अवश्य होता है, इसलिए प्रायः वह अपना परिचय छिपाकर ही रखता है। सबसे बड़ा लाभ यह होता है कि जब व्यक्तियों को यह पता नहीं होता है कि उनके बीच कोई एक प्रेक्षक भी है जो उनके व्यवहारों का प्रेक्षण कर रहा है तो वह बिलकुल ही स्वाभाविक ढंग से व्यवहार करता है। उसके भिन्न-भिन्न व्यवहारों के पैटर्न में कोई दिखावापन नहीं होता है।

सहभागी प्रेक्षण (participant observation) की सफलता अन्य बातों के अलावा, दो प्रमुख कारकों पर निर्भर करता है। पहला कारक (factor) यह है कि इसमें प्रेक्षक (observer) को उन व्यक्तियों के साथ एक सौहार्द्रपूर्ण सम्बन्ध (cordial relationship) बनाकर रखना चाहिए जिनके व्यवहारों का प्रेक्षण उसे करना है अन्यथा वे लोग उनके साथ सहयोग नहीं करेंगे और तब एक वैज्ञानिक ढंग से प्रेक्षण करना सम्भव नहीं हो पायेगा। दूसरा महत्त्वपूर्ण कारक (factor) यह है कि प्रेक्षक (observer) को हमेशा एक उत्तरदायी (responsbile) ढंग से उन व्यक्तियों के साथ व्यवहार करना चाहिए जिनके व्यवहारों को प्रेक्षण किया जा रहा है। अक्सर देखा गया है कि प्रेक्षक (observer) उन व्यक्तियों के साथ इस ढंग का व्यवहार करते हैं जिससे यह पता चलता है कि वह उन लोगों से बुद्धि (intelligence) तथा सूझ-बूझ (insight) में श्रेष्ठ (superior) हैं। प्रेक्षक को इस ढंग से व्यवहार नहीं करना चाहिए क्योंकि ऐसा होने से सम्भव है कि उन्हें प्रेक्षण किये जाने वाले व्यक्तियों का उतना सहयोग नहीं मिल पायेगा जितना एक वैज्ञानिक एवं वस्तुनिष्ठ प्रेक्षण (objective observation) के लिए आवश्यक है।

सहभागी प्रेक्षण (participant observation) के कुछ गुण (merit) तथा दोष (demerit) हैं।

इसके प्रमुख गुण (merits) निम्नांकित हैं—

(i) इस तरह के प्रेक्षण में प्रेक्षक व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण एक स्वाभाविक संदर्भ (natural context) में करता है। फलस्वरूप, वह व्यक्तियों के प्रत्येक व्यवहारिक पहलू जिससे किसी व्यवहार का विशेष अर्थ समझा जा सकता है, को सही-सही रिकार्ड कर उसका विश्लेषण करने में समर्थ होता है। इससे उसके परिणाम की सार्थकता काफी बढ़ जाती है।

(ii) प्रायः यह देखा गया है कि सहभागी प्रेक्षण कई दिनों तक चलता है। परिणामस्वरूप जो सूचनाएँ प्राप्त होतीं हैं, वे काफी विस्तृत तथा अर्थपूर्ण होती हैं। उनका विश्लेषण करने से प्राप्त परिणाम (result) अन्य विधियों से प्राप्त परिणाम से कहीं अधिक अर्थपूर्ण होता है।

सहभागी प्रेक्षण (participant observation) के कुछ दोष (demerits) भी हैं जो निम्नांकित हैं—

(i) चूँकि प्रेक्षक इस विधि में व्यक्तियों के क्रिया-कलापों में सक्रिय भाग लेता है (जबकि वह जानता है कि उसे इन क्रियाओं से कोई मतलब नहीं है) इसलिए धीरे-धीरे वे समूह में अपना एक विशेष पद (position) बना लेता है और अपनी सक्रियता कम कर देता है। परिणामस्वरूप, वह बहुत सारे वास्तविक अन्तःक्रियाओं (real interactions) का रिकार्ड करना ही भूल जाता है और उसका प्रेक्षण दोषपूर्ण हो जाता है। इतना ही नहीं, वह अपने इस विशेष रोल या भूमिका (role) द्वारा समूह के पूरे सदस्यों के व्यवहार के पैटर्न को ही बदल देता है।

(ii) प्रेक्षक धीरे-धीरे अपनी मानवीय कमजोरियों (human weaknesses) को दिखाना शुरू कर देता है। प्रायः यह देखा गया है कि कुछ समय के बाद प्रेक्षक (observer) समूह के अन्य व्यक्तियों के साथ सांवेगिक रूप से (emotionally) उलझ जाता है। वह किसी दुखद घटना के होने पर अन्य सदस्यों के साथ मिलकर सहानुभूति

दिखलाने लगता है। व्यक्तियों के व्यवहार पर इन घटनाओं के प्रभाव को रिकार्ड करना भूलकर वह अपना समय सहानुभूति दिखलाने में व्यर्थ बर्बाद कर देता है। जितना ही सांवेगिक उलझन emotional involvement) का स्तर अधिक होता है, उसके प्रेक्षण में आत्मनिष्ठता (subjectivity) उतनी ही अधिक बढ़ जाती है।

(iii) सहभागी प्रेक्षण से प्राप्त आँकड़ों में प्रायः माननीकरण (standardization) कम होता है। इसका कारण यह है कि धीरे-धीरे प्रेक्षक का अनुभव इस हद तक बदल जाता है कि वह व्यक्तियों के व्यवहारों का सही-सही प्रेक्षण नहीं कर पाता। फलस्वरूप दूसरे प्रेक्षक द्वारा किया गया प्रेक्षण पहले प्रेक्षक से काफी भिन्न हो जाता है। इस तरह से प्रेक्षण का माननीकरण काफी कम हो जाता है।

(iv) प्रेक्षण में चूँकि प्रेक्षक (observer) किसी तरह के जोड़-तोड़ (manipulation) नहीं कर सकता है, अतः उसे उस समय तक इन्तजार करना होता है जब तक कि सदस्यों द्वारा अमुक तरह की अन्तःक्रिया (interaction) स्वयं न कर ली जाय। इससे समय की काफी बर्बादी होती है। यह अवगुण असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) के साथ भी सही उतरता है।

असहभागी प्रेक्षण *(non-participant observation)* वैसे प्रेक्षण को कहा जाता है जिसमें प्रेक्षक व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण एक स्वाभाविक परिस्थिति (natural setting) में तो करता है परन्तु स्वयं व्यक्तियों के क्रिया-कलापों (activities) में हाथ नहीं बँटाता है। **ब्लैक** तथा **चैम्पियन*** (Black & Champion, 1976) ने असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) को परिभाषित करते हुए कहा है, "असहभागी प्रेक्षण एक ऐसी विधि है जिसमें शोधकर्त्ता दूसरे व्यक्तियों के व्यवहारों का प्रेक्षण एक स्वाभाविक परिस्थिति में करता है परन्तु प्रेक्षित व्यवहारों में वास्तविक सहभागी के रूप में कार्य नहीं करता है।" इस सरल परिभाषा से यह बिलकुल ही स्पष्ट है कि इस तरह का प्रेक्षण सहभागी प्रेक्षण (participant observation) से भिन्न है क्योंकि यहाँ प्रेक्षक की भूमिका (role) तुलनात्मक रूप से निष्क्रिय (passive) होती है जबकि सहभागी प्रेक्षण में प्रेक्षक में उसकी भूमिका सक्रिय होती है।

असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) संगठित या संरचित (structured) होता है। फलस्वरूप, प्रेक्षक पहले से इस बात की पूर्व योजना कर लेता है कि स्वाभाविक परिस्थिति का स्वरूप कैसा होगा, प्रेक्षकों की उपस्थिति से उत्पन्न होने वाली समस्याओं का समाधान कैसे किया जा सकता है, आँकड़ों में कहाँ तक सादृश्यमूलता (representativeness) होगी तथा किस ढंग से उसका विश्लेषण किया जायेगा, आदि-आदि। असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) एक-दूसरे अर्थ में भी सहभागी प्रेक्षण (observation) से भिन्न होता है। सहभागी प्रेक्षक (participant observation) में प्रेक्षक का परिचय प्रायः छिपा रहता है परन्तु असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) में प्रायः प्रेक्षक व्यक्तियों के बीच बैठकर ही उनके व्यवहारों का प्रेक्षण करता है। अतः उनका परिचय छिपा रहने का प्रश्न ही नहीं उठता है। हाँ, कुछ अध्ययन ऐसे अवश्य किये गये हैं जिसमें असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) की विधि तो अवश्य अपनाई गयी है परन्तु प्रेक्षक एकतरफा शीशा (one-way glass) के पीछे छिपा रहता है जहाँ से वह सभी व्यक्तियों के व्यवहारों का तो प्रेक्षण करता है परन्तु उसे कोई नहीं देख पाता है।

कुछ वैज्ञानिकों का मत है कि असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) कभी भी पूर्ण-रूपेण असहभागी (non-participant) नहीं हो सकता है। प्रेक्षक को किसी-न-किसी ढंग से व्यक्तियों के साथ कार्य में कुछ-न-कुछ हिस्सा अवश्य बँटाना पड़ता है। अतः असहभागी प्रेक्षण को गुडे तथा हाट (Goode & Hatt, 1987) ने *अर्ध-असहभागी प्रेक्षण* (quasi-non-participant observation) कहा है।

असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) के कुछ गुण तथा दोष हैं।

इसके प्रमुख गुण (merits) निम्नांकित हैं–

(i) असहभागी प्रेक्षण चूँकि संरचित या संगठित (structured) होता है इसलिए इससे प्राप्त आँकड़े अधिक विश्वसनीय (reliable), निरूपक (representative) तथा निर्भर योग्य होते हैं। संरचित (structured) होने से प्रेक्षक प्रेक्षण के भिन्न-भिन्न पहलुओं (aspects) के बारे में अच्छी तरह सोच-विचार करता है और उससे सम्बन्धित सभी प्रक्रियाओं के बारे में पहले से एक निर्णय कर रखता है।

---

* "Non-participant observation is a procedure in which the investigator observes the behaviour of others in natural settings but is not an actual participant in the behaviour being examined."
—Black & Champion : *Method and Issues in Social Research*, 1976, p. 334

(ii) असहभागी प्रेक्षण में प्रेक्षक (observer) अध्ययन किये जाने वाले व्यवहारों के किसी विशेष पहलू पर अधिक ध्यान दे पाता है तथा उससे सम्बन्धित जाँच प्रश्नों (probe questions) का समाधान ढूँढ़ने के लिए वह अधिक-से-अधिक अवसर निकाल पाता है।

इन गुणों के बावजूद असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) के कुछ दोष (deperits) भी हैं जो निम्नांकित है—

(i) असहभागी प्रेक्षण का सबसे बड़ा दोष यह बतलाया गया है कि इस तरह के प्रेक्षण (observation) में व्यक्तियों का व्यवहार बिलकुल ही स्वाभाविक (natural) नहीं होता है क्योंकि व्यक्तियों के मन में हमेशा यह बात रहती है कि उनके व्यवहार का प्रेक्षण किसी अन्य व्यक्ति द्वारा किया जा रहा है। परन्तु इस अवगुण या दोष के विरोध में भी तर्क दिये गये हैं। तर्क देते हुए कुछ वैज्ञानिकों का कहना है कि दो-तीन दिन के बाद से व्यक्तियों का व्यवहार बिलकुल ही सामान्य एवं स्वाभाविक हो जाता है। इतना ही नहीं, अभी तक कोई ऐसा प्रयोगात्मक सबूत नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जाय कि असहभागी प्रेक्षण में प्रेक्षक की उपस्थिति से अध्ययन किये जाने वाले व्यवहार की स्वाभाविकता (naturalness) प्रभावित हो जाती है। ब्लैक तथा चैम्पियन (Black & Champion, 1976) ने ठीक ही इस पर टिप्पणी करते हुए कहा है, "अभी तक कोई ऐसा सबूत नहीं है जिसके आधार पर यह कहा जाय कि असहभागी प्रेक्षक की उपस्थिति का कुप्रभाव अध्ययन किये जाने वाले व्यवहार पर पड़ता है।"

(ii) कुछ समाज वैज्ञानिकों (social scientists) का मत है कि जिस तरह सहभागी प्रेक्षण में परिस्थिति बिलकुल ही स्वाभाविक होता है, उसी तरह की परिस्थिति असहभागी प्रेक्षण में नहीं हो पाती है। इस परिस्थिति में उपस्थित सभी व्यक्ति इस बात से काफी सचेत रहते हैं कि कोई अजूबा व्यक्ति उसके बीच है जो पता नहीं क्या-क्या देख रहा है, सुन रहा है तथा समझ रहा है।

सहभागी प्रेक्षण (participant observation) तथा असहभागी प्रेक्षण (non-participant observation) में प्रेक्षण की कौन अधिक उपयुक्त विधि है, इसका निर्णय इस बात पर निर्भर करता है कि किस व्यवहार का अध्ययन किस तरह की परिस्थिति में किस उद्देश्य से किया जा रहा है। परन्तु इतना तो अवश्य कहा जा सकता है कि सहभागी प्रेक्षण विधि का उपयोग वहाँ अधिक लाभप्रद होता है जब शोधकर्त्ता को अन्य दूसरी विधियों से आँकड़ों को संग्रह करने में अधिक दुर्लभता महसूस हो।